

---

# Shri Ganesha Chalisa

श्री गणेश चालीसा

## Document Information

---

Text title : shrri gaNesha chaaliisaa

File name : gaNesha40.itx

Category : chAlisA, ganesha

Location : doc\_z\_otherlang\_hindi

Transliterated by : NA

Proofread by : NA

Description-comments : Devotional hymn to gaNesha, of 40 verses

Latest update : March 14, 2005

Send corrections to : [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

January 14, 2022

*sanskritdocuments.org*

---

---

## Shri Ganesha Chalisa

---

### श्री गणेश चालीसा

---



जय गणपति सद्गुणसदन कविवर बदन कृपाल ।  
विघ्न हरण मंगल करण जय जय गिरिजालाल ॥

जय जय जय गणपति राजू । मंगल भरण करण शुभ काजू ॥

जय गजबदन सदन सुभदाता । विश्व विनायक बुद्धि विधाता ॥

वक्र तुण्ड शुचि शुण्ड सुहावन । तिलक त्रिपुरा लाल मन भावन ॥

राजित मणि मुक्तन उर माला । स्वर्ण मुकुट शिर नयन विशाला ॥

पुस्तक पाणि कुठार त्रिशूल । मोदक भोग सुगन्धित दूल ॥

सुन्दर पीताम्बर तन साजित । यरण पादुका मुनि मन राजित ॥

धनि शिवसुवन षडानन आता । गौरी ललन विश्व-विधाता ॥

ऋद्धि सिद्धि तव यँवर सुधारे । मूषक वाहन सोढत द्वारे ॥

कडौं जन्म शुभ कथा तुम्हारी । अति शुचि पावन मंगल कारी ॥

ओक समय गिरिराज कुमारी । पुत्र लेतु तप कीन्हा भारी ॥

भयो यज्ञ जब पूर्ण अनूपा । तब पडुँय्यो तुम धरि द्विज रूपा ॥

अतिथि जानि कै गौरी सुभारी । बडु विधि सेवा करी तुम्हारी ॥

अति प्रसन्न है तुम वर दीन्हा । मातु पुत्र छित जो तप कीन्हा ॥

मिललि पुत्र तुछि बुद्धि विशाला । बिना गर्भ धारण यहि काला ॥

गणनायक गुण ज्ञान निधाना । पूजित प्रथम रूप भगवाना ॥

अस कछि अन्तर्धान रूप है । पलना पर बालक स्वरूप है ॥

बनि शिशु रुदन जबलि तुम ठाना । लभि मुष् सुष् नछि गौरि समाना ॥

सकल मगन सुष् मंगल गावलिं । नभ ते सुरन सुमन वर्षावलिं ॥

शम्भु उमा अडुदान लुटावळि । सुर मुनि जन सुत देभन आवळि ॥  
 लपि अति आनन्द मंगल साजा । देभन ली आये शनि राजा ॥  
 निज अवगुण गुनि शनि मन माळी । बालक देभन थाडत नाळी ॥  
 गिरजा कछु मन लेद अढःायो । उत्सव मोर न शनि तुळि भायो ॥  
 कडन लगे शनि मन सकुयाळ । का करिळी शिशु मोळि टिभाळ ॥  
 नळि विश्वास उमा कर लयळी । शनि सौं बालक देभन कळयळी ॥  
 पडःतळि शनि दृग कोण प्रकाशा । बालक शिर ठडःि गयो आकाशा ॥  
 गिरजा गिरीं विकल है धरणी । सो दृभ दशा गयो नळि वरणी ॥  
 डाडाकार मय्यो कैलाशा । शनि कीन्ड्यो लपि सुत को नाशा ॥  
 तुरत गरुडः यढःि विष्णु सिंघाये । काटि यड सो गज शिर लाये ॥  
 बालक के घडःि ठापर धारयो । प्राण मंत्र पढःि शंकर डारयो ॥  
 नाम गणेश शम्भु तब कीन्डे । प्रथम पूज्य बुद्धि निधि वर दीन्डे ॥  
 बुद्धि परीकशा जब शिव कीन्डा । पृथ्वी की प्रदक्षिणा लीन्डा ॥  
 यले चडानन भरमि लुलाळ । रथी बैठ तुम बुद्धि उपाळ ॥  
 यरण मातु-पितु के धर लीन्डे । तिनके सात प्रदक्षिणा कीन्डे ॥  
 धनि गणेश कळि शिव छिय डरषे । नभ ते सुरन सुमन अडु बरसे ॥  
 तुम्हरी मळिमा बुद्धि अडःाळ । शेष सडस मुण सडै न गाळ ॥  
 मै मति डीन मलीन दृभारी । करडुँ कौन बिधि विनय तुम्हारी ॥  
 भजत रामसुन्दर प्रभुदासा । लभ प्रयाग ककरा दुर्वासा ॥  
 अब प्रभु दया दीन पर कीजै । अपनी शक्ति भक्ति कुछ दीजै ॥  
 दौडा

श्री गणेश यड यात्रीसा पाठ करेँ धर ध्यान ।

नित नव मंगल गृह बसै लडे जगत सन्मान ॥

संवत् अपन सडस दश ऋषि पंचमी दिनेश ।

पूरण चालीसा भयो मंगल मूर्ति गणेश ॥

॥ आरती श्री गणेश जु की ॥

जय गणेश जय गणेश जय गणेश देवा । माता जकी पारवती पिता मछादेवा ॥

अेकदन्त ध्यावन्त चारभुजाधारी । माथे पर तिलक सोढे मूसे की सवारी ॥

पान चढे हल चढे और चढे मेवा । लडुअन का भोग लगे सन्त करे सेवा ॥

अंधे को आँभ देत कोढे न को काया । बाँजन को पुत्र देत निर्धन को माया ॥

सूर श्याम शरण आये सकल कीजे सेवा । जय गणेश जय गणेश जय गणेश देवा ॥

---

*Shri Ganesha Chalisa*

pdf was typeset on January 14, 2022

Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

